कटीघाटी – चन्देरी नगर के दक्षिण में पहाड़ को काटकर कटीघाटी एवं प्रवेशद्वार बनाया गया हैं 80 फिट ऊंचा, 39 फिट चौड़ा और 192 फिट लम्बाई में पहाड़ी को काट कर इस घाटी का निर्माण किया गया है। इस घाटी के बीच में ही पहाड़ को काटकर मेहराबदार प्रवेशद्वार को बनाया गया है, जिसके दोनो ओर दो बुर्ज बनाये गये हैं। द्वार की लम्बाई एवं चौड़ाई क्रमशः 17 एवं 11.5 फिट है। कटी घाटी में उत्तर दिशा में चट्टान को काटकर सीढ़ी मार्ग बनाया गया है, जिससे द्वार के ऊपरी भाग में पहुंचा जा सकता है। द्वार पर लगे दो अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इस घाटी एवं द्वार का निर्माण सन् 1490 ई. मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन शाह के शासन काल में जिमन खाँ के द्वारा किया गया था।

कौशक महल – स्थापत्य कला का यह अनूठा स्मारक चंदेरी नगर से 4 किमी. की दूरी पर मुंगावली जाने वाले राजमार्ग पर है। यदि हम इस महल के मध्य में खड़े हो जाते हैं तो यह स्मारक घन (+) के आकार में चार बराबर खण्डों में बंटा हुआ दिखाई देता है। इसके चारो

यह स्मारक घन (+) के आकार में चार बराबर खण्डों में बंटा हुआ दिखाई देता है। इसके चारो खण्डों का नाप एवं डिजायन (निर्माण शैली) सभी एक सा है। इस ढांचे की समरूपता, ज्यामितीय तत्वाधारिता इसकी विशेषता है। अफगान शैली में निर्मित इस महल की तीन मंजिलें पूर्ण है जबकि चौथी मंजिल के कुछ भाग खड़े है। प्रत्येक मंजिल की छत की दीवारें अलग-अलग प्रकार की है। प्रत्येक मंजिल पर बाहर की ओर एक निश्चित अंतराल पर बालकनी व खिड़कियां बनी हुई है, इसके मध्य में विशाल मेहराबदार सुन्दर द्वार एवं उन पर अलंकृत पाषाण निर्मित कमल-पुष्पों का अंकन है। इस महल का निर्माण पन्द्रहवीं शताब्दी में मालवा के सुल्तान महमूद शाह खिलजी प्रथम ने जौनपुर विजय के उपलक्ष्य में कराया था।

बत्तीसी बावड़ी – चन्देरी नगर में स्थित विभिन्न बावड़ियों में बत्तीसी बावड़ी सबसे बड़ी एवं विशिष्ट है। यह बावड़ी 60 फिट की वर्गाकार चार खण्डों में विभक्त है, जिसके प्रत्येक खण्ड में आठ घाट है। इस प्रकार से कुल 32 घाट होने के कारण इस बावड़ी को बत्तीसी बावड़ी कहते है। अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि इस बावड़ी का निर्माण 1485 ई. में मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन शाह द्वारा करवाया गया था।

बड़ा मदरसा – यह स्मारक स्थापत्य कला का एक अनूठा एवं अद्भुत नमूना है, जो कि एक मकबरा भी है, जिसे बाद में मदरसे में परिवर्तित कर दिया गया था। मदरसे के चारो बरामदे में बनी बड़ी-बड़ी मेहराबें इसे भव्यता प्रदान करती है। इसके मध्य का भाग 9.96 मी. का एक वर्गाकार हाल है, जिसकी दीवारों पर बनी बंद मेहराबों को विभिन्न ज्यामितीय अलंकरण से सजाया गया है। इस स्मारक में केवल एक प्रवेश द्वार है जबकि इसकी तीन तरफ की अन्य दीवारों के ऊपरी भाग में सुन्दर जालियों का प्रयोग किया गया है जबकि इसकी तीन तरफ की अन्य दीवारों के ऊपरी भाग में सुन्दर जालियों का दीवारों के ऊपरी भाग में सुन्दर जालियों का प्रयोग किया गया है। मदरसे का गुम्बद ध्वस्त हो चुका है जबकि चारो कोनो की चार मीनारों के अवशेष वर्तमान में भी देखे जा सकते है।

पुरातत्व संग्रहालय:– चन्देरी स्थित पुरातत्व संग्रहालय भी दर्शकों को आर्कषित करता है। यहां प्रमुख रूप से विभिन्न सम्प्रदायों यथा शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन धर्म से संबंधित देव प्रतिमाएं, स्थानीय राजवंशों के अभिलेख, चित्र प्रतिकृति तथा अन्य कलात्मक वस्तुएं एवं वास्तुखण्डों के अवशेष प्रदर्शित है।

अपील

एतद् द्वारा जन सामान्य को अवगत कराना है कि भारत की संसद से पारित होन के पश्चात् भारत सरकार द्वारा प्राचीन स्मारक एंव पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम 2010, 30 मार्च 2010 को राजपत्र अधिसूचना संख्या 13 द्वारा जारी किया गया है। यह अधिनियम प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल एवं अवशेष अधिनियम 1958 का संशोधित रूप है। यह दोनों अधिनियम बेवसाईट www.asi.nic.in पर उपलब्ध है। इस अधिनियम का उद्देश्य हमारी विरासत को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना है तथा यह राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों के प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण चाहे वह लोक परियोजना ही क्यो न हो, न होने देने के सरकार के दृढ़ निश्चय को प्रदर्शित करता है। इस अधिनियम के द्वारा किसी भी केन्द्रीय संरक्षित स्थल अथवा स्मारक की सीमा से चतुर्दिक न्यूनतम 100 मीटर के क्षेत्र को प्रतिषिद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है। प्रतिषिद्ध क्षेत्र के परे चतुर्दिक न्यूनतम 200 मीटर के क्षेत्र को विनियमित क्षेत्र माना गया है। अतः अपनी बहुमूल्य धरोहर की सुरक्षा हेतु उपरोक्त अधिनियम के प्रवधानों के कार्यवंयन में प्रत्येक नागरिक का सक्रिय सहयोग प्रार्वनीय है।

अधीक्षण पुरातत्वविद्,
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,भोपाल मण्डल, जी.टी.बी.
काम्पलेक्स, बी ब्लाक,द्वितीय तल, टी.टी. नगर,
भोपाल 462003 फोन नं0. 0755-2558250, 2558270
टेली फेक्स 0755-2558250 email circlebho@gmai.com
. www.asi.nic.in

चन्देरी

A Historical city

2010's

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
भोपाल मण्डल

चन्देरी

भारतीय मानचित्र पर चंदेरी मध्यप्रदेश के अशोक नगर जिले में 24° 42' उत्तर अक्षांश एवं 78° 11' पूर्व देशान्तर पर स्थित है। यह स्थल उत्तर प्रदेश राज्य के ललितपुर नगर से लगभग 40 कि.मी. पश्चिम में तथा जिला मुख्यालय अशोक नगर से लगभग 65 कि.मी. पूर्व में स्थित है। चन्देरी पहुंचने के लिये निकटतम रेल्वे स्टेशन ललितपुर है जहां से सड़क मार्ग द्वारा यात्री-बस अथवा स्वयं के वाहन द्वारा पहुंचा जा सकता है।

चारो ओर से विन्ध्यांचल पर्वतमाला से घिरा यह क्षेत्र पुरातत्व, इतिहास, प्राकृतिक सौंदर्य, धर्म, सांस्कृतिक विरासत एवं उत्कृष्ट साड़ी निर्माण के लिये प्रसिद्ध है। भारत के इस प्राचीन नगर में शौर्य, पराक्रम, त्याग और बलिदान के अनूठे उदाहरण मिलते हैं। यहां के स्थापत्य एवं मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने हमारे वैभवशाली अतीत के साक्षी हैं। देश-विदेश के हजारों तीर्थ यात्री एवं पर्यटक प्रतिवर्ष यहां आते हैं।

इतिहास – चन्देरी नगर का गौरवमयी इतिहास है जो प्रागैतिहासिक काल से प्रारंभ होकर वर्तमान काल तक का एक लम्बा सफर तय करता है। चन्देरी व इसके आस-पास के स्थलों पर मौजूद शैलचित्र और उन क्षेत्रों से प्राप्त पत्थर के औजार इस बात का द्योतक है कि यह स्थल प्रागैतिहासिक मानव की शरणस्थली रही है।

उत्तर वैदिककालीन महाकाव्य महाभारत में शिशुपाल का नाम चेदि राज्य (चन्देरी) के शासक के रूप में वर्णित है जो महाराजा चैद का पौत्र तथा भगवान श्रीकृष्ण का फुफेरा भाई था। पुराणो में भी चन्देरी राज्य का विवरण मिलता है। ईसा पूर्व छठी शताब्दी के जैन तथा बौद्ध साहित्य में वर्णित षोडश महाजनपदों में भी चेदि राज्य का उल्लेख मिलता है। इस चेदि राज्य

को वर्तमान में बूढ़ी चन्देरी के नाम से जाना जाता है, जो वर्तमान चन्देरी नगर से मात्र 18 कि. मी. उत्तर पश्चिम में स्थित है। वहां बिखरे मंदिरों, शिलालेखों एवं मूर्तियों के अवशेषों से यह स्पष्ट होता है कि यह स्थल प्राचीन काल में निश्चित रूप से कोई ऐतिहासिक नगर रहा होगा जो कालान्तर में घने जंगल में विलीन हो गया। 13वीं शताब्दी तक बूढ़ी चंदेरी का महत्व

धीरे-धीरे समाप्त हो गया तथा वर्तमान चन्देरी अस्तित्व में आ गया। वर्तमान चन्देरी नगर को 10वीं-11वीं शताब्दी में प्रतिहारवंशी राजा कीर्तिपाल ने बसाया था एवं इसे अपनी राजधानी बनाया था। ग्वालियर के गूजरी महल में रखे चंदेरी के कल्याण मंदिर से प्राप्त शिलालेख में प्रतिहार वंश के 12 राजाओं का उल्लेख मिलता है जिसमें कीर्तिपाल सातवें राजा थे।

महमूद गजनबी के साथ आए इतिहासकार अल्बरूनी ने अपने ग्रन्थ (यात्रा वृतान्त) तहकीक-ए-हिन्द में चन्देरी की समृद्धि और महत्वता का वर्णन किया है। फरिश्ता के विवरणानुसार 1251 ई0 में दिल्ली के सुल्तान नासिरउद्दीन ने चन्देरी पर आधिपत्य कर उस पर अपना गर्वनर नियुक्त किया था। कनिंघम के अनुसार संभवतः यह विवरण बूढ़ी चन्देरी के संदर्भ में है। अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई0 में देवगिरि जाते हुये चन्देरी में लूट-पाट की थी, संभवतः इस समय चन्देरी पर पुनः किसी हिन्दू शासक का आधिपत्य था। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के काल में चन्देरी एक बड़ी मुस्लिम छावनी के रूप में विकसित हुआ। 1342 ई0 में मोरक्को यात्री इब्ने बतूता चन्देरी आया। अपने वर्णन में उसने लिखा है कि चन्देरी एक बड़ा शहर है जहां भीड़ भरे बाजार हैं। फिरोज तुगलक ने दिलावर खां गोरी को चन्देरी व माण्डू का हाकिम नियुक्त किया। 1401 ई0 में उसने अपने को स्वतंत्र कर मालवा को राज्य बनाया। चन्देरी मालवा राज्य का तथा मध्य भारत का एक प्रमुख नगर बन गया। मालवा के राजा महमूद शाह खिलजी तथा उसके पुत्र गयासुद्दीन खिलजी के काल को चन्देरी का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इस काल के अनेक स्मारक, झीलें, तालाब, बावड़ियां एवं शिलालेख आज भी विद्यमान हैं। 1524 ई0 में राजपूत राजा राणा सांगा के सहयोग से मालवा का राजपूत सरदार मेदिनी राय चन्देरी का स्वतंत्र शासक बना। 1528 ई. में मुगल सम्राट बाबर ने राणा सांगा व मेदिनी राय के सेनाओं को परास्त कर चन्देरी पर अधिकार किया। ओरछा के बुन्देला राजा मधुकर शाह के पुत्र राम सिंह ने 1586 ई0 में चन्देरी पर अधिकार किया तथा 1811 ई0 तक बुन्देलों का राज्य रहा। तत्पश्चात चन्देरी 1811 ई0 तक बुन्देलों का राज्य रहा। तत्पश्चात चन्देरी पर मराठा शासक ग्वालियर के दौलतराव सिन्धिया का राज्य स्थापित हुआ। 1844 ई0 में चन्देरी ब्रिटिश नियन्त्रण में चला गया। 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय यहां पर राजा मर्दन सिंह का आधिपत्य था। 1858 ई0 में चन्देरी पर ब्रिटिश सर ह्यूज रोज ने कब्जा कर लिया तथा 1861 ई0 में एक सन्धि के अन्तर्गत चन्देरी ग्वालियर राज्य को दे दिया गया तथा यहां पर सिन्धिया वंश का शासन 1947 ई0 तक रहा।

चन्देरी दुर्ग – चन्देरी दुर्ग धींगदो नामक पहाड़ी पर वर्तमान नगर के भूमि तल से लगभग 71 मी0 की ऊंचाई पर है। प्रतिहार कालीन अभिलेखानुसार चन्देरी दुर्ग का निर्माण 11वीं शताब्दी में कीर्तिपाल नामक प्रतिहार राजा ने करवाया था जिसके नाम पर ही यह दुर्ग कीर्ति दुर्ग के नाम से जाना जाता था। वर्तमान में दुर्ग पर बुंदेला राजा दुर्जन सिंह द्वारा बनवाया गया नौखण्डा महल एवं एक पुरानी मस्जिद के अवशेष ही शेष है जिसमें सुंदर नक्काशीकारी एवं पच्चीकारी का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। किले के पश्चिम की ओर के प्रवेशद्वार को हवा महल या हवापौर के नाम से जाना जाता है जो अब मात्र खंडहर के रूप में है।

दुर्ग पर पहुचने के लिये मुख्य रूप से तीन मार्ग है- पहला मार्ग पक्का सड़क मार्ग है, जिससे वाहन द्वारा सुगमता से ऊपर पहुचा जा सकता है तथा दो अन्य मार्ग मां जोगेश्वरी देवी मंदिर की तरफ से सीढ़ी मार्ग द्वारा एवं खूनी दरवाजे से पैदल किले के ऊपर पहुचा जा सकता है।

किले का निचला प्रवेशद्वार खूनी दरवाजा के नाम से जाना जाता है। 1528 ई. में बाबर द्वारा किये गये भीषण नरसंहार के कारण खून की धारा इस द्वार से प्रवाहित हो गई थी इसीलिये इसका नाम खूनी दरवाजा पड़ा। दुर्ग में ही जौहर स्मारक स्थित है जिसे चंदेरी पर बाबर की विजय के समय राजपूत रानियों द्वारा किये गये जौहर के प्रतीक रूप में बनवाया गया था।

बादल महल दरवाजा – जामा मस्जिद के समीप स्थित पन्द्रहवीं शताब्दी में निर्मित इस दरवाजे की किसी भी महल से कोई संबंध नही है। संभवतः इसका निर्माण किसी विशेष घटना अथवा महत्वपूर्ण क्षण की यादगार के रूप में किया गया था। इस द्वार में एक के ऊपर एक दो मेहराबदार प्रवेशद्वार है जिसकी ऊंचाई लगभग 50 फिट है। इसके दोनो ओर दो बुर्ज है जो नीचे स्थूलाकार होकर ऊपर की ओर पतले होते गये है। बादल महल दरवाजे के ऊपरी

भाग में लगी सुन्दर बारीक जालियां प्रमुख रूप से इसके आकर्षण का केन्द्र है।

जामा मस्जिद – लगभग पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित चन्देरी की यह मस्जिद स्थापत्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। मस्जिद में 31.42 X 24.38 मी. के खुले प्रागंण में पश्चिम की ओर प्रार्थना हाल तथा उत्तर व दक्षिण में बरामदे है जबकि पूर्व का वास्तविक स्थापत्य नष्ट हो चुका है एवं कालांतर में इसे विभिन्न कलात्मक पत्थरों द्वारा पुनः निर्मित किया गया है। इसकी किबला दीवाल पर सुन्दर मेहराबों को उकेरा गया है। मस्जिद की प्रार्थना सभा की छत पर निर्मित विशालकाय गुम्बदों एवं उन पर निर्मित पद्मकोश, कलश एवं आमलक को देखकर हिन्दू स्थापत्य का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

निजामुद्दीन का मकबरा – चन्देरी में स्थित संत निजामुद्दीन औलिया के वंशजों के मकबरे एवं कब्रे पत्थर में तराशी गई कला के बेजोड़ नमूने है। इन मकबरों पर उत्कृष्ट सुन्दर जाली, बेलबूटे तथा जालियों की कारीगरी देखते ही बनती है।

शहजादी का रोजा – यह स्मारक किसी सुल्तान की शहजादी का मकबरा है, जिसका नाम ज्ञात नहीं है। यह चौकोर स्मारक दो खण्डों में निर्मित है जिसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी छत एक विशाल गुम्बद से आच्छादित रही होगी। इसकी प्रत्येक दिशा में पांच बंद मेहराबोंयुक्त दीवारों पर सर्पाकार कोष्ठकों पर अलंकृत छज्जा निर्मित है जो ऊपरी व निचले खण्डों को विभक्त करता है। स्मारक के बाहरी ऊपरी भाग पर रंगीन टाइल्सों का उपयोग किया गया था, जो आज भी स्पष्ट दिखाई देता है। इस स्मारक का निर्माण 1420-35 ई0 के मध्य किया गया था।